International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.9 No.6 July – Aug 2022

संयुक्त तथा एकल परिवार के संदर्भ में महिलाओं के विचार का अध्ययन

Dr. Amita Srivastava
Assist. Prof. Deptt. Of Education, D.A.V.(P.G.) College, Dehradun Uttarakhand
***Corresponding Author*- Dr. Amita Srivastava**
Email- amitasrivastava0105@gmail.com
DOI- 10.5281/zenodo.7070954

सारांश –

व्यक्ति के सामाजीकरण के विकास में परिवार अपनी एक महत्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत करता है। बच्चा परिवार के सदस्यों, माता पिता एवं रिश्तेदारों से सीख कर अपने व्यवहार में परिवर्तन लाता है। **लूसी मेयर** के अनुसार "परिवार गार्यहस्थ समूह है जिसमें माता पिता और संतान साथ साथ रहते हैं। इसके मूल रूप में दम्पत्ति एवं उनकी संतान रहती है "। एक संयुक्त परिवार ऐसे व्यक्तियों का एक समूह है जो सामान्यतः एक ही घर में रहते हैं, जो एक ही रसोई में बना भोजन करते हैं, जो संपत्ति के सम्मिलित स्वामी होते हैं तथा जो सामान्य पूजा में भाग लेते हैं टुर जो किसी ना किसी प्रकार से एक दूसरे से रक्त संबंधी हो।एकल परिवार का मतलब एक ऐसी पारिवारिक संरचना से है जिसमे केवल पति-पत्नि और उनके अविवाहित बच्चे शामिल होते हैं। एकल परिवार पाश्चात्य संस्कृति की देन है। एकल परिवारों को आजकल न्यूक्लियर फैमिली भी कहा जाता है।इसमें परिवार का कोई भी व्यक्ति केवल उन्ही लोगों के प्रति उत्तरदायी होता है जो परिवार में है। ड़ा॰कपाड़िया ने " नवीन न्याय व्यवस्था ,यातायात केनवीन साधन,औद्योगीकीकारण, शिक्षा के प्रसार तथा परिवर्तित मनोवृतियों को संयुक्त परिवार के विघटन के लिए उत्तरदायी माना गया है "। परिवर्तन ,समाज में विवाह ,परिवार के क्रिया कलाप, गतिविधि रहन सहन आदि मे बदलाव है। सामाजिक विघटन प्रकृति का एक नियम है । समाज प्रकृति का ही एक अंग है ,अतः समाज में बिघटन होता रहता है। संयुक्त परिवार के विघटन का प्रभाव समाज के सभी वर्गों में सामान्य रूप से पड़ा है। समाज में होनेवाले आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक विघटन किसी न किसी रूप में परिवार तथा समाज के सदस्यों को प्रभावित करते हैं, जिसका प्रभाव परिवार व उनके सदस्यों के रहन सहन संस्कृति एवं अनेक पक्षों और विचारों पर पड़ता है

मुख्य शब्द -संयुक्त परिवार, एकल परिवार, महिला

प्रस्तावना

समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति सामाजिक परंपराओं रीतियों के अनुसार व्यवहार करना सीखता है। बच्चा अपने आसपास के वातावरण के आधार पर विकसित होता है। सामाजिकरण के द्वारा ही व्यक्ति समाज के विकास के लिए ही वह स्वयं पर नियंत्रण करना तथा समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्व को समझना सीखता है। व्यक्ति के सामाजीकरण के विकास में परिवार अपनी एक महत्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत करता है। बच्चा परिवार के सदस्यों, माता पिता एवं रिश्तेदारों से सीख कर अपने व्यवहार में परिवर्तन लाता है। Family शब्द का उदगम लैटिन शब्द 'Famulas' से हुआ है जो ये कैसे समूह के लिए प्रयुक्त हुआ है जिसमें माता पिता, बच्चे, नौकर और दास हों। साधारण अर्थों में विवाहित जोड़े को परिवार की संख्या दी जाती है किंतु समाज शास्त्रीय दृष्टि से यहाँ पे परिवार शब्द सही उपयोग नहीं है। परिवार में पति पत्नी एवं बच्चे का होना आवश्यक है। इस में से किसी भी एक के आभाव में हम उसे परिवार ना कहकर गृहस्थ कहेंगे। यह संभव है कि परिवार एवं गृहस्थ के सदस्य एक ही हो। प्रत्येक परिवार एक गृहस्थ भी है किंतु सभी ग्रहस्थ परिवार नहीं है। परिवार की परिभाषाओं से यह बात और और भी स्पष्ट हो जाएगी। विभिन्न विद्वानों ने परिवार को इस प्रकार परिभाषित किया है –

मर्डाक के अनुसार "परिवार एक ऐसा सामाजिक समूह है जिसके लक्षण सामान्य निवास, आर्थिक सहयोग और जनन है। इनमें दो लिंगों के बालिग शामिल हैं जिनमें कम से कम दो व्यक्तियों में यौन संबंध होता है और जिन बालिग व्यक्तियों मैं यौन संबंध होता है, उनके अपने या गोद लिए हुए एक या अधिक बच्चे होते हैं।"

लूसी मेयर के अनुसार "परिवार गार्यहस्थ समूह है जिसमें माता पिता और संतान साथ साथ रहते हैं। इसके मूल रूप में दम्पत्ति एवं उनकी संतान रहती है "

संयुक्त परिवार –

प्राचीन समय में 20 वीं शताब्दी तक भारत में संयुक्त परिवार होते थे संयुक्त परिवार से तात्पर्य "पति-पत्नि उनमें, चाचा-चाची, बुआ आदि होते थे। जैसा कि **इरावती कर्वे** ने बताया है की "एक संयुक्त परिवार ऐसे व्यक्तियों का एक समूह है जो सामान्यतः एक ही घर में रहते हैं, जो एक ही रसोई में बना भोजन करते हैं, जो संपत्ति के सम्मिलित स्वामी होते हैं तथा जो सामान्य पूजा में भाग लेते हैं टुर जो किसी ना किसी प्रकार से एक दूसरे से रक्त संबंधी हो।"

इस प्रकार कहा जा सकता है कि संयुक्त परिवार में एक से अधिक पीढ़ियों के सदस्य होते हैं। और परिवार की आय, संपत्ति अधिकारों तथा कर्तव्यों द्वारा संबद्ध रहते हैं। अर्थात संयुक्त परिवार से अभिप्राय है कि जिनमें कई पीढ़ी के लोग एक साथ रहते हैं या एक पीढ़ी के सभी भाई उनकी पत्नियां बच्चे तथा अन्य संबंधियों के साथ सामूहिक रूप से निवास करते हैं।

मैक्समुलर का कहना है " भारत में परिवार का आशय संयुक्त परिवार से है जिसमे दो या दो से अधिक रक्त संबंधी, परिवार में एक साथ रह सकते हैं। "

एकल परिवार –

एकल परिवार का मतलब एक ऐसी पारिवारिक संरचना से है जिसमे केवल पति-पत्नि और उनके अविवाहित बच्चे शामिल होते हैं। एकल परिवार पाश्चात्य संस्कृति की देन है। एकल परिवारों को आजकल न्यूक्लियर फैमिली भी कहा जाता है। इसमें परिवार का कोई भी व्यक्ति केवल उन्ही लोगों के प्रति उत्तरदायी होता है जो परिवार में है। इसमें दादा दादी तथा चाचा चाची को भी शामिल नहीं किया जाता है । एकाकी परिवार मे संस्कृति का हस्तांतरण उचित प्रकार से नहीं हो पाता है। ये एकाकी परिवार में जहाँ बच्चे एक सीमित दायरे में ही रहते हैं तथा इनका आधार व्यक्तिवादिता है। एकाकी परिवारों में आयु एवं लिंग को समानता का अधिकार दिया जाता है। एकल परिवार होने के मुख्य कारण है-

1. आज स्त्री तथा पुरुष बराबर से परिवार में आर्थिक योगदान दे रहे हैं जहाँ पहले केवल पुरुष ही नौकरी करते थे, वही आज स्त्रियां भी पढ़ लिखकर नौकरी कर रही है तथा आत्मनिर्भर है, अतः उन्हें किसी से आर्थिक मदद की आवश्यकता महसूस नहीं होती है और वे स्वयं पर ही आश्रित होने लगीं हैं।
2. आज के समय मे इतनी ज्यादा मंहगाई है कि एक व्यक्ति के वेतन से घर का खर्च, बच्चों कि पढ़ाई एवं अन्य जरूरतों को पूरा करना बहुत मुश्किल हो गया है अतः अब यह आवश्यक हो गया कि पति पत्नी दोनों ही नौकरी करें तभी उनकी जरूरतें पूरी हो पाएँगी ।
3. एकल परिवारों मे आजकल सीमित संतानों को जन्म दिया जा रहा है, एवं उनका लालन पोषण बहुत ही लाड़ प्यार से हो रहा है, उनकी समस्त जरूरतें पूरी कि जा रहीं हैं, जिसके परिणाम स्वरूप बच्चों में सहनशीलता का आभाव हो गया है, मिलजुल कर रहने, मिलबांट कर खाने पीने आदि की आदत नहीं है । एकल परिवार होने के कारण ये बच्चे अपने परिवार के सदस्यों के अलावा और किसी के साथ अपने को समायोजित नहीं कर पाते हैं । यही कारण है कि संयुक्त परिवारों का स्थान एकल परिवारों ने ले लिया है, और एकल परिवारों कि संख्या आज के युग मे अधिक है। परिवर्तन ,समाज में विवाह ,परिवार के क्रिया कलाप, गतिविधि रहन सहन आदि मे बदलाव है। सामाजिक विघटन प्रकृति का एक नियम है । समाज प्रकृति का ही एक अंग है ,अतः समाज में बिघटन होता रहता है। संयुक्त परिवार के विघटन का प्रभाव समाज के सभी वर्गों में सामान्य रूप से पड़ा है। समाज में होनेवाले आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक विघटन किसी न किसी रूप में परिवार तथा समाज के सदस्यों को प्रभावित करते हैं, जिसका प्रभाव परिवार व उनके सदस्यों के रहन सहन संस्कृति एवं अनेक पक्षों और विचारों पर पड़ता है ।

वर्तमान समय में परिस्थितियों के बदल जाने से संयुक्त परिवार तेजी से विघटित होते जा रहे हैं । ड़ा॰

एन॰आर॰ सक्सेना ने संयुक्त परिवार में परिवर्तन लाने वाली शक्तियों को 3 भागों मे बाँटा –

1) आर्थिक सक्तियाँ 2) भावनात्मक शक्तियाँ 3) नए सामाजिक कानून

ड़ा॰कपाड़िया ने " नवीन न्याय व्यवस्था ,यातायात केनवीन साधन,औद्योगीकीकारण, शिक्षा के प्रसार तथा परिवर्तित मनोवृतियों को संयुक्त परिवार के विघटन के लिए उत्तरदायी माना गया है "।वर्तमान समय मे हर सदस्य स्वतंत्र वातावरण में रहना चाहता है। संयुक्त परिवार में आज भी परिवार के सदस्य मुखिया के आदेश के अनुसार चलते हैं। परंतु एकाकी परिवार में वे अपने अधिकारों का हनन मानते हैं और वे किसी के अनुसार चलना पसंद नई करते है तथा अपने मूल्यों और अपने लिए जीना पसंद करते हैं। संयुक्त तथा एकल परिवार की बदलती दिशा और दशाओं के कारण इस समस्या को लिया गया है। इसमे यह ज्ञात करना है कि महिलाओं का संयुक्त तथा एकल परिवार के संबंध में क्या विचार हैं

अध्ययन का उद्देश्य –

1. संयुक्त तथा एकल परिवार के संबंध में महिलाओं के विचार जानना।

2. 21 से 55 वर्ष की महिलाओं का संयुक्त और एकल परिवार के पक्ष में प्रतिशत ज्ञात करना।

परिकल्पना –

1. संयुक्त परिवार के पक्ष में महिलाओं का प्रतिशत अधिक होगा ।

2. 50 से 55 वर्ष की महिलाओं का संयुक्त परिवार के पक्ष प्रतिशत होगा।

3. 21 से 45 वर्ष की महिलाओं का एकल के पक्ष अधिक प्रतिशत होगा।

शोध विधि – प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक विधि के अंतर्गत सर्वेक्षण विधि के प्रयोग किया गया है।

आंकड़े संग्रहण के लिए स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है जिसमे संयुक्त तथा एकल परिवार से संबन्धित 40 प्रश्नों को रक्खा गया है।

परिकल्पना 1- संयुक्त परिवार के पक्ष में महिलाओं का अधिक प्रतिशत होगा –

तालिका 1

संयुक्त परिवार के पक्ष मे महिलाओं का प्रतिशत	एकल परिवार के पक्ष मे महिलाओं का प्रतिशत
75%	60%

उपरोक्त तालिका में संयुक्त परिवार के पक्ष में अधिक प्रतिशत है अर्थात 75% महिलाएं संयुक्त परिवार को महत्ता देती हैं क्योंकि संयुक्त परिवार में रहने से व्यक्ति की बहुत सी समस्याओं का समाधान हो जाता है। बच्चों का पालन पोषण भी आसानी से हो जाता है तथा आर्थिक रूप से भी यदि किसी को मदद छिए होती है तो सभी मिलकर अपने परिवार के सदस्यों की सहायता करते हैं। अतः उपरोक्त परिकल्पना में संयुक्ता परिवार को स्थान दिया गया है। वैसे तो एकल परिवार के पक्ष का प्रतिशत भी कम नहीं है परंतु संयुक्त की अपेक्षा कम है अतः यह परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

परिकल्पना – 2 45 से 55 साल की महिलाएं संयुक्ता परिवार के पक्ष मे होतीं हैं।

तालिका - 2

संयुक्त परिवार के पक्ष मे प्रतिशत	एकल परिवार के पक्ष मे प्रतिशत
80%	55%

45 से 55 वर्ष तक की महिलाओं का विश्वास आज भी संयुक्त परिवार में है अतः वे संयुक्ता परिवार के पक्ष में 80% धारणा रखतीं हैं, अतः यह परिकल्पना भी स्वीकार की जाती है। साथ ही एकल के पक्ष में 55% महिलाएं धारणा रखतीं हैं यह परिकल्पना भी स्वीकार की जाती है। 45 से 55 वर्ष की महिलाओं ने अपने वर्षों के अनुभव के आधार पर यह पक्ष व्यक्त किया है। जहां एकल परिवार में व्यक्ति स्वतन्त्रता का अनुभव करता है वहीं उसके सामने एकल परिवार के चलते बच्चों के लालन पोषण आदि मे दिक्कत का सामना करना पड़ता है। एक दूसरे के प्रति जो सम्मान के भाव उत्पन्न होते हैं वे संयुक्त परिवार मे रहने से उत्पन्न होते हैं।

परिकल्पना-3 21 से लेकर 45 वर्ष की उम्र की महिलाओं मे एकल परिवार के पक्ष अधिक प्रतिशत होता है।

तालिका - 3

संयुक्त परिवार के पक्ष में महिलाओं का %	एकल परिवार के पक्ष में महिलाओं का %
60%	75%

उपरोक्त परिकल्पना में एकल परिवार के पक्ष में महिलाओं का प्रतिशत संयुक्त की अपेक्षा अधिक है अतः यह परिकल्पना स्वीकार की जाती है । इसका भी मुख्य कारण यह है की आजकल अधिकतर महिलाएं रोज़गार में लगीं हैं एवं वह जहां नौकरी कर रहीं होतीं हैं वहीं पर वह अकेले अपने पति एवं बच्चों के साथ रह रही होती हैं। उनका परिवारजनों के साथ रहना संभव नहीं हो पाता है अतः वे एकल परिवार के पक्ष में होतीं हैं, परंतु इसमें संयुक्त परिवार के पक्ष का प्रतिशत कम है इसका कारण है कि अकेले रहने से बच्चों के लालन पोषण कि समस्या, नौकरी मे जाने पर बच्चों के देखभाल कि समस्या आदि आती है जिसके चलते एकल परिवार कि महिलाएं चिन्ताग्रस्त रहती हैं कि उनके बच्चे की देखभाल कौन करेगा। अतः वे भी कुछ हद तक अपने को संयुक्त परिवार में रखना चाहती हैं।

निष्कर्ष-

निष्कर्ष के रूप में हम यह कह सकते हैं की वर्तमान समय में भी संयुक्ता परिवारों की आवश्यकता अनुभव की जा रही है । यद्यपि कि बड़े बड़े शहरों में एकल परिवार ही हैं, परंतु हमारे ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी संयुक्त परिवार देखने को मिल रहें हैं । संयुक्त परिवारों में बच्चों में समायोजन क्षमता, नैतिकता आदि बहुत से गुण विकसित होते हैं जिसका कि एकल परिवारों के बच्चों में अक्सर अभाव देखने को मिलता है।

भविष्य के लिए सुझाव-

उपरोक्त परीक्षण के आधार पर भविष्य के लिए अन्य शोध कार्य किए जा सकते हैं

1. इसमे केवल शिक्षित महिलाओं को ही शामिल किया गया है अतः भविष्य में कम शिक्षित महिलाओं को भी लिया जा सकता है।
2. इसमें कार्यरत एवं अकार्यरत दोनों प्रकार की महिलाओं पर तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है
3. इस अध्ययन में केवल शहरी महिलाओं को ही लिया गया है। ग्रामीण महिलाओं पर भी यह अद्ज्ञयन किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. शर्मा राम नाथ एवं राजेंद्र कुमार – प्रमुख समाजशास्त्री विचारक – अटलांटिक पब्लिकेशन, दिल्ली।
2. सिंह अरविंद कुमार –समाजशास्त्र एवं भारतीय समाज में शिक्षा -अपोलो प्रकाशन, मार्ग पंचवटी, जयपुर।
3. चन्द्रा एस॰ एस॰एवं शर्मा के॰ राजेंद्र –Sociology of Education – Atlantic Publisher,N. Delhi
4. शिक्षा के सामाजिक आधार – पचौरी गिरीश, आर॰ लाल बुक डिपो, मेरठ।
5. गुप्ता एम॰ एल॰ एवं शर्मा डी॰ डी॰ – समाज शास्त्र 2015 – साहित्य भवन, आगरा।
6. कपिल एन॰ के॰ एवं सिंह ममता – सांख्यिकी के मूल तत्व – अग्रवाल पब्लिकेशन्स , आगरा।
7. www.catchindia.in